शिक्षकों के बर्नआउट के प्रथम आयाम गैर सिद्धि और कार्यसंतुष्टि पर अध्ययन

डॉ. पदमा अग्रवाल
प्राध्यापक (शिक्षा संकाय)
मनसा शिक्षा महाविद्यालय, कुरुक्षेत्र
भिलाई नगर, (छ.ग.)

श्रीमती रंजना परेल
सहायक प्राध्यापक (शिक्षा संकाय)
मनसा शिक्षा महाविद्यालय, कुरुक्षेत्र
भिलाई नगर, (छ.ग.)

सारांश
प्रस्तुत अध्ययन में छत्तीसगढ़ के शिक्षकों की गैर सिद्धि और कार्य संतुष्टि का अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन हेतु दूर्ग जिले के 450 शिक्षकों को स्तरीकृत यात्रिक विधि द्वारा लिया गया है। शिक्षकों की गैर सिद्धि (बर्नआउट का प्रथम आयाम) के मापन हेतु श्री प्रो. करणा शंकर मिश्रा द्वारा निर्मित बर्नआउट इन्डेक्सरी का उपयोग किया गया तथा कार्य संतुष्टि के मापन हेतु श्री डॉ. प्रभाव कुमार ठी. एन. गुप्ता द्वारा निर्मित कार्य संतुष्टि प्रश्नावली का उपयोग किया गया। सार्थकता विश्लेषण हेतु चतुर्दिश प्रस्तरण विश्लेषण की गणना की गई। अध्ययन के निष्कर्ष यह बताते हैं कि शिक्षकों की गैर सिद्धि का कार्य संतुष्टि पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।

प्रस्तावना
शिक्षा आजीवन चलने वाली एक सत्ता प्रक्रिया है। शिक्षा ही एक ऐसा माध्यम है जो मनुष्य को आचार, विचार में निपुण बनाता है। शिक्षा के अभाव में जीवन की कल्पना ही मुरक्कल है। शिक्षण कार्य एक कौशल है जो मनुष्य को विकसन के रूप में मिलता है। शिक्षण कार्य का मुख्य बिंदु शिक्षक होता है। शिक्षक उस मूल्यकार की तरह है, जो छात्रों के भविष्य को आचार देकर उन्हें एक जिम्मेदार नागरिक बनाते हैं। शिक्षक अपने कर्त्तव्यों का निष्ठा एवं ईमानदारी से निर्वहन करते हैं। परन्तु कुछ निरीक्ष परिस्थितियाँ उनके गर्भ में व्यक्तियों उत्तम करती हैं, जिसके फलस्वरूप शिक्षण कार्य प्रभावित होता है। आज के आधुनिक युग में शिक्षण कार्य एक व्यवसाय बन चुका है। वर्तमान समय में शिक्षा तथा शिक्षकीय कार्य अपने वास्तविक लक्ष्य से बदल जाता है। वर्तमान युग प्रतिपादित युग है जहाँ शिक्षकों के समक्ष नित नई चुनौतियाँ आती रहती हैं। अत्यधिक कार्यभर विधालय प्रशासन द्वारा शिक्षकों के साथ तनावशील, अनुभूत व्यापारण आदि विचार होने पर शिक्षकों में कार्य के प्रति असंतोष एवं बर्नआउट जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। यदि शिक्षक अपने कार्य में असंतोष व नीतिरता का अनुभव करते हैं, निरिखत रूप से शिक्षकों के व्यवहार तथा उनकी मनोरथि में भी परिवर्तन होने की संभावना हो जाती है।
वर्त्तमान समय का प्रचलित एवं महत्वपूर्ण शब्द है। वर्त्तमान समय में यह सर्वप्रथम है कि कार्य विशेष की सफलता उस कार्य को करने वाले व्यक्ति की पूर्ण संतुष्टि, आशिशिक संतुष्टि या पूर्णता: असंतुष्टि पर निर्भर करता है। यदि व्यक्ति जो भी कार्य करता है और उससे उससे संतुष्टि प्राप्त होती है तो वह उस कार्य के प्रति समर्पित होगा। वह कार्य के पूर्ण रूप से साथ करेगा तथा परिक्रिया भी करगा। इसके विपरीत यदि व्यक्ति को कार्य करने में असंतुष्टि होती है तो उस कार्य को करने में ना तो वह परिक्रिया करेगा और ना ही उस वह कार्य करने में रूप होगा। कार्य संतुष्टि होते हरे पर कार्य निष्पाप पूर्ण भी किया जायेगा।

कार्य संतुष्टि दो शब्दों का मेल है अर्थात् दो शब्दों से मिलकर बना है कार्य और संतुष्टि। कार्य का तापस्या यहां ऐसे कार्य से है जो व्यक्ति द्वारा कार्य किया जा रहा है उस कार्य से वह अपना जीवनकोपार्जन का या खाने के आवश्यक तौर पर ध्यान की प्राप्ति करता है। ध्यानपूर्वक शब्द विवाहित है। संतुष्टि भारतीय दार्शनिकों के अनुसार त्याग भी है। संतुष्टि में बहुत ही कम ऐसे व्यक्ति होते हैं जो संतुष्टि की चमगानी तक पहुँच चाहें। प्रायः यह देखा जाता है तो विलुप्त व्यक्ति अपने कार्य से पूर्णता संतुष्टि है। संतुष्टि के संबंध में यह कहा जा सकता है कि संतुष्टि का अर्थ संतोष अथवा प्रसन्नता है। इस प्रकार कार्य-संतुष्टि एक आंतरिक गुण होता है ना की बाह्य। इसका संबंध व्यक्ति के अंतर्गत से होता है। प्रायः यह देखा जाता है कि बहुत से ऐसे व्यक्ति है जो अपनी श्रेष्ठतम अवस्था में होते हुए भी पूर्णता संतुष्टि नहीं है। इसके विपरीत अनेक ऐसे व्यक्ति भी हैं जो प्रतिकूल परिस्थितियों में होने पर भी कार्य से संतुष्टि होते हैं। कार्य संतुष्टि में भीतिकाया को समीक्षित किया गया है। वर्त्तमान समय की परिस्थितियों से कई भी अनुगमन नहीं है वर्तमान समय भीतिकाया से परिपूर्ण है।

उद्देश्य
1. शिक्षकों की गैर सिद्धि, लिंग, परिवेश एवं अनुभव का उनकी कार्य संतुष्टि पर पड़ने वाले मुख्य एवं अंतर्क्रियात्मक प्रभाव का अध्ययन करता है।

परिकल्पना

H₁ शिक्षकों की गैर सिद्धि का कार्यसंतुष्टि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा।
H₂ शिक्षकों के लिंग का कार्यसंतुष्टि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा।
H₃ शिक्षकों के परिवेश का कार्यसंतुष्टि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा।
H₄ शिक्षकों के अनुभव का कार्यसंतुष्टि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा।
H₅ शिक्षकों की गैर सिद्धि, लिंग एवं उनकी अंतर्क्रिया का कार्यसंतुष्टि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा।
H₆ शिक्षकों की गैर सिद्धि, परिवेश एवं उनकी अंतर्क्रिया का कार्यसंतुष्टि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा।
H₇ शिक्षकों की गैर सिद्धि, अनुभव एवं उनकी अंतर्क्रिया का कार्यसंतुष्टि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा।
H₈ शिक्षकों के लिंग, परिवेश, अनुभव एवं उनकी अंतर्क्रिया का कार्यसंतुष्टि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा.
H₉ शिक्षकों की गैर सिद्धि, लिंग, परिवेश, अनुभव एवं उनकी अंतर्क्रिया का कार्यसंतुष्टि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा।

अध्ययन की परिसीमा

1. प्रस्तावित अध्ययन में केवल दुर्ग जिले के तीन विकासखंड (दुर्ग, पाटन एवं धमघाट) के शिक्षकों को चयनित किया जायेगा।
2. प्रस्तुत अध्ययन हेतु उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों को चयनित किया गया है।
3. प्रस्तुत अध्ययन में शिक्षकों का चयन लिंग, परिवेश, एवं अनुभव के आधार पर किया गया है।

शोध विवेचना

न्यायशा

न्यायशा हेतु दुर्ग जिले के 3 विकासखंडों (दुर्ग, पाटन एवं धमघाट) के 450 शिक्षकों का चुनाव सर्वेक्षण विधि द्वारा किया गया।

उपकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु शिक्षकों की गैर सिद्धि, के मापन हेतु श्री प्रो. कल्यणा शांकर मिश्रा द्वारा निर्मित बर्नआउट इंस्ट्रीटी का उपयोग किया गया तथा कार्य संतुष्टि के मापन हेतु श्री ज्ञ. प्रमोद कुमार डी. एन. मुथा द्वारा निर्मित कार्य संतुष्टि प्रश्नावली का उपयोग किया गया।
प्रदर्शित के साथियों की विश्लेषण एवं व्याख्या

संकल्प गृह के साथियों की विश्लेषण हेतु 2x2x2 चुनौतियों प्रतिरोध विश्लेषण की गणना की गई है:

\[ H_1 \] शिक्षकों की गैर सिद्धि, का कार्यसंतुष्टि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा।

### तालिका क्रमांक-1
शिक्षकों की गैर सिद्धि, लिंग, परिवेश एवं अनुभव के लिए 2x2x2 प्रतिरोध विश्लेषण का सारांश

<table>
<thead>
<tr>
<th>स्थिति</th>
<th>वर्गों का योग</th>
<th>df</th>
<th>वर्ग का औसत</th>
<th>( F )</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>गैर सिद्धि</td>
<td>29.555</td>
<td>13</td>
<td>2.273</td>
<td>0.559</td>
</tr>
<tr>
<td>लिंग</td>
<td>8.224</td>
<td>1</td>
<td>8.224</td>
<td>2.023</td>
</tr>
<tr>
<td>परिवेश</td>
<td>104.964</td>
<td>1</td>
<td>104.964</td>
<td><strong>25.818</strong></td>
</tr>
<tr>
<td>अनुभव</td>
<td>0.007</td>
<td>1</td>
<td>0.007</td>
<td>0.002</td>
</tr>
<tr>
<td>गैर सिद्धि लिंग</td>
<td>17.704</td>
<td>9</td>
<td>1.967</td>
<td>0.484</td>
</tr>
<tr>
<td>गैर सिद्धि परिवेश</td>
<td>18.741</td>
<td>7</td>
<td>2.677</td>
<td>0.659</td>
</tr>
<tr>
<td>गैर सिद्धि अनुभव</td>
<td>12.876</td>
<td>10</td>
<td>1.288</td>
<td>0.317</td>
</tr>
<tr>
<td>लिंग परिवेश अनुभव</td>
<td>5.287</td>
<td>1</td>
<td>5.287</td>
<td>1.300</td>
</tr>
<tr>
<td>गैर सिद्धि लिंग परिवेश</td>
<td>7.297</td>
<td>4</td>
<td>1.824</td>
<td>0.449</td>
</tr>
<tr>
<td>अनुभव संसौधित योग</td>
<td>1553.032</td>
<td>382</td>
<td>4.066</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>संसौधित योग</td>
<td>303310.000</td>
<td>450</td>
<td>12.855</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>संसौधित योग</td>
<td>2325.458</td>
<td>449</td>
<td>25.818</td>
<td></td>
</tr>
</tbody>
</table>

*\( \star \) स्तर पर सार्थकता, \( \star \star \) सार्थकता नहीं

तालिका क्रमांक-1 के निरीक्षण से यह ज्ञात होता है कि गैर सिद्धि के लिए \( F \) का मान 0.559, df 1/382 है, जो किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना “शिक्षकों की गैर सिद्धि का कार्यसंतुष्टि पर कोई साथक प्रभाव नहीं पाया जाएगा” को स्वीकृत किया जाता है।

\[ H_2 \] शिक्षकों के लिंग का कार्यसंतुष्टि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा।

तालिका क्रमांक-1 के निरीक्षण से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षकों के लिंग के लिए \( F \) का मान 2.02, df 1/382 है, जो किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना “शिक्षकों के लिंग का कार्यसंतुष्टि पर साथक प्रभाव नहीं पाया जाएगा” को स्वीकृत किया जाता है।

\[ H_3 \] शिक्षकों के परिवेश का कार्यसंतुष्टि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा।

तालिका क्रमांक-1 के निरीक्षण से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षकों के परिवेश के लिए \( F \) का मान 25.81, df 1/382 है, जो 0.01 स्तर पर सार्थक है। इससे यह स्पष्ट होता है कि शिक्षकों के परिवेश का कार्यसंतुष्टि पर साथक प्रभाव गया। अतः शून्य परिकल्पना “शिक्षकों के परिवेश का कार्यसंतुष्टि पर कोई साथक प्रभाव नहीं पाया जाएगा” को अस्वीकृत किया जाता है। स्पष्ट है कि शिक्षकों के परिवेश का कार्यसंतुष्टि के मध्यमान अंक में अंतर पाया गया। तालिका से यह ज्ञात होता है कि ग्रामीण परिवेश के शिक्षकों का मध्यमान 25.00 प्राप्त हुआ है एवं शहरी परिवेश के
शिक्षकों का महत्व 27.21 प्राप्त हुआ है। इस क़थन से यह स्पष्ट होता है कि शहरी परिवेश के शिक्षकों की कार्यसंतुष्टि ग्रामीण परिवेश के शिक्षकों की तुलना में अधिक पायी गयी।

H₄ शिक्षकों के अनुमय का कार्यसंतुष्टि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा।

तालिका क्रमांक-1 के निरीक्षण उपरांत यह ज्ञात होता है कि शिक्षकों के अनुमय के लिए F का मान 0.02, df 1/382 है, जो किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं है। अर्थात् शिक्षकों के अनुमय का कार्यसंतुष्टि पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया। अतः शून्य परिकल्पना “शिक्षकों के अनुमय का कार्यसंतुष्टि पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा” को स्वीकृत किया जाता है।

H₅ शिक्षकों की गैर सिद्धि, लिंग एवं उनकी अंतःक्रिया का कार्यसंतुष्टि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा।

तालिका क्रमांक-1 के निरीक्षण उपरांत यह ज्ञात होता है कि गैर सिद्धि, एवं लिंग के मध्य अंतःक्रिया के लिए F का मान .484, df 1/382 है, जो किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं है। अर्थात् शिक्षकों के गैर सिद्धि एवं लिंग के मध्य अंतःक्रिया का कार्यसंतुष्टि पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया। अतः शून्य परिकल्पना “शिक्षकों की गैर सिद्धि, लिंग एवं उनकी अंतःक्रिया का कार्यसंतुष्टि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा” को स्वीकृत किया जाता है।

H₆ शिक्षकों की गैर सिद्धि, परिवेश एवं उनकी अंतःक्रिया का कार्यसंतुष्टि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा।

तालिका क्रमांक-1 के निरीक्षण उपरांत यह ज्ञात होता है कि गैर सिद्धि, एवं परिवेश के मध्य अंतःक्रिया के लिए F का मान .659, df 1/382 है, जो किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं है। अर्थात् शिक्षकों के गैर सिद्धि, परिवेश एवं उनकी अंतःक्रिया का कार्यसंतुष्टि पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया। अतः शून्य परिकल्पना “शिक्षकों की गैर सिद्धि, परिवेश एवं उनकी अंतःक्रिया का कार्यसंतुष्टि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा” को स्वीकृत किया जाता है।

H₇ शिक्षकों की गैर सिद्धि, अनुभव एवं उनकी अंतःक्रिया का कार्यसंतुष्टि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा।

तालिका क्रमांक-1 के निरीक्षण उपरांत यह ज्ञात होता है कि गैर सिद्धि, एवं अनुभव के मध्य अंतःक्रिया के लिए F का मान .317, df 1/382 है, जो किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं है। अर्थात् शिक्षकों के गैर सिद्धि, अनुभव एवं उनकी अंतःक्रिया का कार्यसंतुष्टि पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया। अतः शून्य परिकल्पना “शिक्षकों की गैर सिद्धि, अनुभव एवं उनकी अंतःक्रिया का कार्यसंतुष्टि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा” को स्वीकृत किया जाता है।

H₈ शिक्षकों के लिंग, परिवेश, अनुभव एवं उनकी अंतःक्रिया का कार्यसंतुष्टि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा।

तालिका क्रमांक-1 के निरीक्षण उपरांत यह ज्ञात होता है कि शिक्षकों के लिंग, परिवेश एवं अनुभव के मध्य अंतःक्रिया के लिए F का मान 1.30, df 1/382 है, जो किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं है। अर्थात् शिक्षकों के, लिंग, परिवेश, अनुभव एवं उनकी अंतःक्रिया का कार्यसंतुष्टि पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया। अतः शून्य परिकल्पना “शिक्षकों के लिंग, परिवेश, अनुभव एवं उनकी अंतःक्रिया का कार्यसंतुष्टि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा” को स्वीकृत किया जाता है।

H₉ शिक्षकों की गैर सिद्धि, लिंग, परिवेश, अनुभव एवं उनकी अंतःक्रिया का कार्यसंतुष्टि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा।

तालिका क्रमांक-1 के निरीक्षण उपरांत यह ज्ञात होता है कि गैर सिद्धि, लिंग, परिवेश एवं अनुभव के मध्य अंतःक्रिया के लिए F का मान .449, df 1/382 है, जो किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं है। अर्थात् शिक्षकों की गैर सिद्धि, लिंग, परिवेश, अनुभव एवं उनकी अंतःक्रिया का कार्यसंतुष्टि पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया। अतः शून्य
परिकल्पना 'शिक्षकों की गैर सिद्धि, लिंग, परिवेश, अनुभव एवं उनकी अंतःक्रिया का कार्यसंतुष्टि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा' को स्वीकृत किया जाता है।

निष्कर्ष

प्रदत्तों के साहित्यिकी विश्लेषण के आधार पर यह निष्कर्ष पाया गया है कि
1. शिक्षकों की गैर सिद्धि का कार्यसंतुष्टि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।
2. शिक्षकों के लिंग का कार्यसंतुष्टि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।
3. शिक्षकों के परिवेश का कार्यसंतुष्टि पर सार्थक प्रभाव पाया गया।
4. शिक्षकों के अनुभव का कार्यसंतुष्टि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।
5. शिक्षकों की गैर सिद्धि, लिंग एवं उनकी अंतःक्रिया का कार्यसंतुष्टि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।
6. शिक्षकों की गैर सिद्धि, परिवेश एवं उनकी अंतःक्रिया का कार्यसंतुष्टि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।
7. शिक्षकों की गैर सिद्धि, अनुभव एवं उनकी अंतःक्रिया का कार्यसंतुष्टि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।
8. शिक्षकों के, लिंग, परिवेश, अनुभव एवं उनकी अंतःक्रिया का कार्यसंतुष्टि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।
9. शिक्षकों की गैर सिद्धि, लिंग, परिवेश, अनुभव एवं उनकी अंतःक्रिया का कार्यसंतुष्टि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

- माथुर, डा. एस. एस। - सामाजिक मनोविज्ञान, साहित्य प्रकाशन, प्रथम संस्करण
- कुंवरसुंग, यू. (1998) – शिक्षक की नौकरी की संतुष्टि पर स्कूल के संगठनात्मक माहौल का प्रभाव। साइको-लिंग्विक, 28(1), 53–56
- सेवर, एफ. (2018) – समस्तार्थक छात्र के व्यवहार के लिए शिक्षक की धारणा: शिक्षक की बर्नआउट स्थितियों के अनुसार परीक्षाएं। शिक्षा अध्ययन के यूरोपीय जर्नल 4(6), 378–393
- वंजीर छुकु – मथिरा पूर्वी जिले में शिक्षक बर्नआउट माध्यमिक विद्यालय का प्रभाव के लिए वेधनजी अनुग्रह, विदेश मंत्रालय/450/3
- क्रूम डीबी (2003): कृषि शिक्षा के कृषि जर्नल में शिक्षक बर्नआउट 44(2), 1–13